“पर्यावरण शिक्षा के प्रति राजकीय महाविधालयो के विद्यार्थीयो का रुझान एक सर्वेक्षण”

Journal of Advances in Science and Technology

Vol. VIII, Issue No. XVI, February-2015, ISSN 2230-9659

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

“पर्यावरण शिक्षा के प्रति राजकीय महाविधालयो के विद्यार्थीयो का रुझान एक सर्वेक्षण”

Tasvir Singh[1] Dr. Chander Mohan[2]

[1]Assistant Professor of Geography, Govt. College, Bhiwani

[2]Assistant Professor of Geography, Govt. College, Narnaul, Email: cmgeography@gmail.com

Abstract – ***पर्यावरण तथा मानव का सम्बंध उतना ही पुराना है जितना मानव का उद्‌भब तथा विकास परन्तु मानव ने अपने बौद्दिक विकास के साथ पर्यावरण से बदलते हुए सम्बंध बनाए है, जिनसे पर्यावरण को कभी हानि हुई है, तो कभी लाभ हुआ है। मानव के साथ पर्यावरण का सम्बंध समय के साथ –साथ ओर गहरा होता गया क्योकि मानव के हर पहलू पर्यावरण के साथ जुड़े है यहाँ तक मानव की मूलभूत आबशयकता एवम अन्य आबशयकताये यहाँ तक मानव की आर्थिक क्रिया कलाप, आहार, रंग रूप, कद काठी आदि सभी। हम यह कह सकते की आदि मानव से लेकर मेघावी मानव के सफर तक मानव ने पर्यावरण के साथ किसी न किसी रूप मे सम्बंध जरूर बनाए है। माँ के रूप में पर्यावरण ने मानव को सब कुछ दिया है परन्तु मानव ने जिस थाली मे खाया उसी माँ रूपी पर्यावरण मे छेद किया क्योकि मानव की संख्या बढने और विकास के कारण आज पर्यावरण का विनाश हो रहा है तथा पर्यावरण का संतुलन बिगड़ रहा या खराब हो रहा है जिसका प्रत्यक्ष एवम परोक्ष रूप मे प्रभाव मानव पर पड़ रहा है और पर्यावरण पर भी पड़ रहा है इसलिये पर्यावरण को सुरक्षित एवम संरक्षण के लिये मानव के दुवारा प्रयत्न किया जा रहा है तथा आज सभी देशो मे और भारत मे पर्यावरण शिक्षा को लागू करने का प्रयास किया जा रहा जो ढकोसला मात्र ही है आज देश की सुप्रीम कोर्ट एवम विश्वविधालयों ने पर्यावरण शिक्षा को अनिवार्य शिक्षा के रूप मे लागू कर दिया जिससे पर्यावरण का संतुलन हो सके परन्तु यह शिक्षा मात्र कागजी हो कर रह गई है इसी पर राजकीय महाविधालय स्तर पर एक सर्वेक्षण किया गया जिसमे पर्यावरण शिक्षा के प्रति राजकीय महाविधालयो के विद्यार्थीयो का क्या रुझान है। आज इस पर्यावरण शिक्षा को सही दिशा और दशा देने की जरूरत है जिससे इस पृथ्वी पर पर्यावरण और मानव जायदा समय तक साथ –साथ चल सके।***

Keywords:---- **पर्यावरण, उद्‌भब ,*संरक्षण,आपदा,प्रबंधन,विकास, बौद्दिक***

---------------------------♦-----------------------------

METHDOLOGY:----

इस बात का पता लगाने के लिए कि कॉलेज विद्याथियों में पर्यावरणीय शिक्षा के प्रति ज्ञान एवं चेतना एवं रूझान के लिए एक शोध किया गया। शोध में राजकीय महाविद्याल**यो बौन्द तथा लोहारु ओर भिवानी तथा** बिरोहड़ के 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। जिसमें 50 लड़के एवं 50 लडकियों को शामिल किया गया।ˆउचसम त्दकवउˆ मसमबजपवद विधि द्वारा लिया गया इन सभी विद्यार्थियों को एक पहले से तैयार की गई प्रश्नावली का परफोरमा दिया गया जिसमें पर्यावरणीय शिक्षा एवं पर्यावरण संरक्षण एवं समस्या सम्बंधी 50 प्रशन शामिल किए गए तथा इस प्रश्नावली में सभी प्रश्नों के जवाब हाँ या ना में पूछे गए। एवं प्रश्नों का उत्तर देने के लिए 1/2 घन्टा ;30 मिन्टद्ध का समय रख गया। सभी विद्यार्थियों का शोध का उद्‌देश्य पहले ही वता दिया गया था।

HYPOTHESIS:----

1- पर्यावरणीय शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों का रूझान हो सकता है

2. पर्यावरणीय शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों का रूझान नहीं सकता है

पर्यावरणीय शिक्षा एक परिचय :–

- पर्यावरणीय शिक्षा का अर्थ :– पर्यावरणीय शिक्षा का सामान्य अर्थ उस शिक्षा से है जो हमें पर्यावरण के संरक्षण, संवर्धन और सुधार के योग्य बनाती है। यह शिक्षा हमें पर्यावरण एवं मनुष्य के अर्न्तसम्बंधों का अध्ययन कराती है।

www.ignited.in

पर्यावरणीय शिक्षा की परिभाषाएँ :–

1. ''पर्यावरणीय शिक्षा वह प्रक्रिया है जो हमे पर्यावरण से सम्बन्धित संचेतना, ज्ञान एवं समझ देती है इसके सम्बंध में अनुकुल दृष्टिकोण का विकास करती है और इसके संरक्षण तथा सुधार की दिशा में प्रतिव(करती है'' ए. बी. सक्सेना

2. ''पर्यावरणीय शिक्षा वह प्रक्रिया है जो मनुष्य में पर्यावरण सुधार के प्रति संचेतना, कौशल अभिवृतियों और समर्पण का विकास करती है।'' मिश्रा

पर्यावरणीय शिक्षा की विशेषताएँ :–

1. पर्यावरण सम्बंधी ज्ञान, समझ कौशल, अभिवृतियों और मूल्यों का विकास करती।

2. पर्यावरण शिक्षा में भौतिक जैविक सामाजिक एवं मनौवैज्ञानिक पर्यावरण की जानकारी।

3. पर्यावरण शिक्षा में भौतिक जैविक, सामाजिक पर्यावरण के सम्बंधों का बौध कराती है।

4. प्राकृतिक सामाजिक परिवेश की समस्याओं को पहचाने एंव उनके समाधान के योग्य बनाती।

5. पर्यावरण शिक्षा किसी एक विषय तक सीमित न हो के अन्त विषय पर आधारित।

6. इस शिक्षा सैदान्तिक एवं व्यावहारिक दोनों पक्षों से सम्बंधित है।

7. इस शिक्षा का सम्बंध ज्ञानात्मक, क्रियात्मक, भावात्मक तीनों पक्षों से है।

8. यह शिक्षा पर्यावरण की समस्याओं का आंकलन, स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर करती है।

पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता :–

1. पर्यावरण अवनयन को बढ़ने से कम करने के लिए।

2. पर्यावरण को प्रदूषित होने से वचाने के लिए।

3. लुप्त होती प्रजातियों को बचाने के लिए।

4. प्राकृतिक आपदाओं को कम करने के लिए।

5. साफ एवं स्वच्छ पर्यावरण के लिए।

6. भावी पीढ़ियों को बचाने के लिए।

पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य

1. जागरूकता

2. ज्ञान

3. दृष्टिकोण

4. कौशल

5. प्रतिभागिता

6. पर्यावरण संरक्षण

पर्यावरणीय शिक्षा का पाठ्यक्रम

1. प्राथमिक स्तर पर पर्यावरणीय शिक्षा का पाठ्यक्रम

2. माध्यमिक स्तर पर पर्यावरणीय शिक्षा का पाठ्यक्रम

3. उच्च शिक्षा स्तर पर पर्यावरणीय शिक्षा का पाठ्यक्रम

पर्यावरण शिक्षा के प्रति सर्वोच्च न्यायालय एवं सरकार का दृष्टिकोण :–

पर्यावरण के प्रति शुरू से ही बच्चों में सामंजस्य की भावना एवं पर्यावरण प्रदूषण की विश्वव्यापी समस्याओं को दूर करने के उद्देश्य से भारत देश की स्र्वोच्च न्यायालय ने एक ऐतिहासिक फैसले के तहत सभी विश्वविद्यालयों ने कॉलेज स्तर पर पर्यावरणीय विषय को अनिवार्य बना दिया वही न्ळब् ने सारे देश में पर्यावरण पुस्तिका एक पाठ्यक्रम तैयार किया है। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक ने भी इस विषय को सभी संकाओं में अनिवार्य विषय के रूप में स्वीकार किया है।

पर्यावरण शिक्षा में क्या–क्या शामिल है। :–

1. पर्यावरण के प्रमुख खंड। ;जल मंडल, वायु मंडल, स्थल मंडल एवं जय मंडलद्ध

2. पारिस्थितिक तन्त्र का ज्ञान

3. पारिस्थितिक तन्त्र के कार्य

4. पर्यावरण संरक्षण हेतु सरकारी कानून

5. पर्यावरण शिक्षा हेतु सरकारी सहायता।

6. पर्यावरणीय शिक्षा को बढ़ाने में मिडिया का योगदान।

पर्यावरणीय शिक्षा की विधियाँ :–

1. सैद्वान्तिक विधियाँ

1. व्याख्यान विधि

2. सामुहिक बाद विवाद

3. शैक्षणिक पर्यटन

4. नाटकीय विधि

5. सेमिनार तथा कार्यशाला

2. व्यावहारिक विधियाँ

1. **लघु समूह विधि**

2. वृहत समूह विधि

3. प्रदर्शन विधि

4. प्रोजेक्ट विधि

5. निरिक्षण विधि

मुख्य पर्यावरणीय शिक्षा की गतिविधियां

1. पर्यावरणीय प्रदर्शनी का आयोजन करना।

2. पर्यावरणीय सम्बंधी साहित्य का विकास एवं वितरण करना।

3. पर्यावरण सम्बंधित राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय दिवस मनाना।

4. संचार माध्यमों का उपयोग।

5. सम्मेलन एवं सगोष्टियाँ आयोजन करना।

6. मानव श्रृंखला बनाना।

7. सांस्कृतिक माध्यम

8. विभिन्न पर्यावरणीय।

9. जुलूस या प्रभात फेरिया का आयोजन।

10. सामुदायिक स्वच्छता कार्यक्रमों का आयोजन।

सर्वेक्षण :–

इस बात का पता लगाने के लिए कि कॉलेज विद्याथियों में पर्यावरणीय शिक्षा के प्रति ज्ञान एवं चेतना एवं रूझान के लिए एक शोध किया गया। शोध में राजकीय महाविद्याल**यो बौन्द तथा लोहारु ओर भिवानी तथा** बिरोहड . के 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। जिसमें 50 लड़के एवं 50 लडकियों को शामिल किया गया।"उचसम त्ंदकवउ"मसमबजपवद विधि द्वारा लिया गया इन सभी विद्यार्थियों को एक पहले से तैयार की गई प्रश्नावली का परफोरमा दिया गया जिसमें पर्यावरणीय शिक्षा एवं पर्यावरण संरक्षण एवं समस्या सम्बंधी 50 प्रश्न शामिल किए गए तथा इस प्रश्नावली में सभी प्रश्नों के जवाब हाँ या ना में पूछे गए। एवं प्रश्नों का उत्तर देने के लिए 1/2 घन्टा ;30 मिन्टद्ध का समय रख गया। सभी विद्यार्थियों का शोध का उद्देश्य पहले ही वता दिया गया था।

निष्कर्ष :–

पर्यावरणीय शिक्षा के बारे में सामान्य जानकारी ज्यादातर विद्यार्थियों में पाई गई परन्तु विशेष जानकारी का सभी बच्चों में अभाव देखा गया जैसे प्रश्न नं0 35 में पुछा गया कि कितने माईक्रोन से कम मोटाई के पोलिथिन पर रोक है तो 100 विद्यार्थियों में से कोई भी विद्यार्थी इसका जबाब नहीं दे पाया इसी तरह से प्रश्न नं0 11,12,25,29,30,41,44,45,48 आदि का जबाब भी कम बच्चों ने दिया इन सवालों का जबाब लड़कों की तुलना में लड़कियों ने ज्यादा दिए इससे यह पता लगता है कि महाविद्यालय के विद्यार्थियों का मास मिडिया ;अखबार, टी. वी. मैगजिन आदि में कम रूचि है तथा शोध से यह भी पता चला कि पर्यावरण शिक्षा के प्रति लड़को की अपेक्षा लड़कियों में अधिक रूझान है।

REFERENCES

- Adger, W.N., N. Brooks, M. Kelly, S. Bentham, S. Eriksen (eds.), 2004: New indicators of vulnerability and adaptive capacity. Centre for Climate Research.

- Alcamo, J., D. van Vuuren, C. Ringler, W. Cramer, T. Masui, J. Alder, and K. Schulze, 2005: Changes in nature's balance sheet: Model-based estimates of future worldwide ecosystem services. Ecology and Society, 10(2), pp.19.

- Aldy, J.E., 2005: An environmental Kuznets Curve analysis of U.S. state-level carbon dioxide emissions. Journal of Environment and Development, pp. 48-72.

- Anderson, R., 2004: Climbing Mount Sustainability. Quality Progress, February 2004, pp. 32.

- Arthur, W.B., 1989: Competing technologies, increasing returns, and lock-in by historical events. The Economic Journal, 99, pp. 116-131.

- Beck, U., 1992: Risk Society: Towards a New Modernity. Sage, London.

- Behera, B. and S. Engel, 2005: Institutional analysis of evolution of joint forest management in India: A new institutional economics approach. Forest Policy and Economics, (8)4, pp. 350-362.

- Bell, S. and S. Morse, 1999: Sustainability Indicators: Measuring the Immeasurable. Earthscan, London.

- Bojo, J., K.-G. Mäler, L. Unemo, 1992: Environment and development: An economic

approach. Second Revised Edition. Kluwer Academic Publishers, 211 pp.

- Cocklin, C., 1995: Agriculture, society, and environment: discourses on sustainability. International Journal of Sustainable Development and World Ecology, 2, pp. 240-256.

- Davis, T.S., 1999: Reflecting on voluntary environmental partnerships: Lessons for the next century. Corporate Environmental Strategy, 6(1), pp. 55-59.

- Dietz, T. and P.C. Stern, 1995: Toward a theory of choice: Socially embedded preference construction. The Journal of Socio-Economics, 24, pp. 261-279.

- Doppelt, B., 2003: Leading change toward sustainability: A change-management guide for business, government and civil society. Greenleaf Publishing Ltd., Sheffield.

- Haas, P., 1990: Saving the Mediterranean: the politics of international environmental cooperation. Columbia University Press, New York City.

- Kumar, P., 2001: Valuation of ecological services of wetland ecosystems: A case study of Yamuna flood plains in the corridors of Delhi. Mimeograph, Institute of Economic Growth, Delhi.

- MNP, 2005: Quality and the future. Sustainability outlook. Netherlands Environmental Assessment Agency, Bilthoven, Netherlands, 500013010, 28 pp.

- Ostrom, E., 2000: Collective actions and the evolution of norms. Journal of Economic Perspectives, 14, pp. 137-158.

- Schaefer, A. and A. Crane, 2005: Addressing sustainability and consumption. Journal of Macromarketing, 1, pp 76-92.

- Senge, P. and G. Carstedt, 2001: Innovating our way to the next industrial revolution. MIT Sloan Management Review, Winter, pp. 24-38.

- Sharma, S., 2002: Research in corporate sustainability: What really matters? In Research in Corporate Sustainability: The Evolving Theory and Practice of Organisations in the Natural Environment. S. Sharma and M. Starik (ed.), Edward Elgar, Cheltenham, pp. 1-22.

- Wilbanks, T., 2003: Integrating climate change and sustainable development in a place-based context. Climate Policy, 3(S1), pp. S147-S154.

- Zaelke, D., D. Kaniaru, E. Kruzíková (eds), 2005: Making Law Work: Environmental Compliance & Sustainable Development. Vol. 1 & 2. INECE.

- अवस्थी ओर तिवारी 1995 , पर्यावरण भूगोल सविन्दर सिंह 1991 , पर्यावरण भूगोल

- राम कुमार गुर्जर 2006 , पर्यावरण भूगोल इराक भरूचा 2006, पर्यावरण अध्ययन